धर्मनिरपेक्षीकरण (लौकिकीकरण) की विशेषता

सौरभ स्नेहा
शोधार्थी, समाज शास्त्र
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया।

लौकिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें किसी समाज के सदस्यों के विचार एवं व्यवहार के निर्धारण के लिए मान्यताओं, प्रतीकों एवं संस्थानों के अपेक्षा, बुद्धिसंगत एवं तार्किक दृष्टिकोण को अधिक महत्व दिया जाता है।, लौकिकीकरण कहलाती है। भारतवर्ष में गाँवों और नगरों में विशेषतया हिन्दु समाज में धर्म का प्रभाव घटने के अनुपात में लौकिकीकरण बढ़ा है।

विल्वर्ट मूरे ने लौकिकीकरण की तीन प्रमुख विशेषता बतायी है –

1. रोजमर्रा के जीवन पर घटता हुआ धार्मिक नियंत्रण
2. धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों के प्रति अज्ञेयवादी स्थिति का संभावित विकास और
3. सांस्कारिक व्यवहार का तर्कसम्मत व्यवहार द्वारा प्रतिस्थापन।

अतः लौकिकीकरण औद्योगिक समाज व संस्कृति के आधुनिकीकरण की एक अपरिहार्य विशेषता है। इसके निम्नलिखित विशेषताएँ माने जा सकते हैं।

धार्मिकता का ह्रास – लौकिकीकरण का प्रमुख लक्षण उसकी वृद्धि के साथ–साथ धार्मिकता का ह्रास है। किन्तु समाज में आधुनिक काल में जीवन के विभिन्न कार्यों में धार्मिक व्याख्याओं का महत्व कम हो जाने से लौकिकीकरण में वृद्धि दिखलाई पड़ती है। जैसे जन सामान्य के जीवन में आधुनिकता या तार्किकता की वृद्धि होती है, धार्मिकता का ह्रास होता है। फलतः व्यक्तियों के विचारों में परिवर्तन होते जाते हैं और उनका स्थान सामाजिक उद्देश्य या व्यवहारिक लाभ ले लेते हैं।

तार्किकता – लौकिकीकरण का एक प्रमुख विशेषता तार्किकता भी है। इसके अन्तर्गत सभी विश्वासों और वस्तु विशेष में तर्क का समावेश होता है। जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्या पर तर्क और विवेक के आधार पर विचार किया जाता है, न कि धर्म के संदर्भ में। 'दूसरे शब्दों में परम्परागत विश्वासों व विचारों को आधुनिक ज्ञान के आधार पर बदलना ही तार्किकता है। तार्किकता का बढ़ना ही लौकिकीकरण है।

विभेदीकरण की प्रक्रिया–लौकिकीरण अन्य विशेषताओं में विभेदीकरण प्रक्रिया भी एक है। लौकिकीकरण बढ़ने से समाज में विभिन्न पहलुओं में विभेदीकरण बढ़ा है। समाज के विभिन्न पहलू आर्थिक राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, कानूनी आदि एक दूसरे से पृथक होते जाते हैं। जिसके फलस्वरूप धर्म का प्रभाव कम होता जाता है। आधुनिक समय में पढ़े–लिखे हिन्दू समाज के इन सभी पहलुओं को एक–दूसरे से अलग मानते भी हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उस क्षेत्र के नियमों के अनुसार विचार करना उचित समझते हैं। इस प्रकार धर्म के रूप में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को बाँधने वाला बंधन समाप्त हो जाता है।

विवेकशीलता – लौकिकीरण की एक प्रमुख विशेषता विवेकशीलता है। इसमें व्यक्ति अपने जीवन में उठने वाली प्रत्येक समस्या पर अपने विवेक से विचार करता है और उस संबंध में धार्मिक पुस्तकों में लिखी हुई बातें को विशेष महत्व नहीं देता है। विवेकशील व्यक्ति व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में प्रत्येक बात तो विवेक के द्वारा निश्चित करने का प्रयास करता है। यह धार्मिक परम्पराओं और रूढ़ियों के बिना सोचे–समझे नहीं मानता, बल्कि उनके मूल्य में छिपे हुए कारणों की आलोचना करता है और यदि वे विवेकयुक्त होते है तो उन्हें मानता है अन्यथा उनका परित्याग कर देता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण – लौकिकीकरण की एक प्रमुख विशेषता जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। फ्रायड तथा अन्य विचारकों के अनुसार मनुष्य के जीवन पर ज्यों–ज्यों विज्ञान का प्रभाव बढ़ता जाता है त्यों–त्यों धर्म का प्रभाव कम होता जाता है। फ्रायड का यह मत न माना जाय तो भी इसमें कोई सन्देह नहीं कि विज्ञान की नई–नई खोजों से जीवन के अनेक क्षेत्रों में जैसे–जैसे भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों

में धार्मिक व्याख्याओं का प्रभाव कम होता जा रहा है, क्योंकि उनका स्थान वैज्ञानिक व्याख्यायें लेती जा रही है। यही कारण है आधुनिक भारत में शिक्षा का प्रसार के साथ–साथ लौकिकीरण बढ़ा है। पश्चिम के जिन देशों में विज्ञान की जितनी अधिक प्रगति हुई है, वहाँ पर लौकिकीरण का प्रभाव उतना ही अधिक दिखाई पड़ता है।

''आधुनिक भारतीय संरचना में लौकिकीरण की प्रक्रिया की प्रक्रिया अभी जारी है। सांस्कृतिकरण का प्रभाव केवल हिन्दुओं और जनजातियों तक सीमित थी, जबकि लौकिकीकरण का प्रभाव पूरे देश पर व्याप्त है। एक उदाहरण द्वारा इसकी विशेषताओं को सरलता से समझा जा सकता है। भारतीय समाज इनके लम्बे सांस्कृतिक इतिहास में धार्मिक जीवन का संबंध पूरी तरह मोक्ष प्राप्त करने अथवा पारलौकिक जीवन में सफलता प्राप्त करने से था। तीर्थयात्राओं का उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना था, कर्मकाण्डों, धार्मिक आयोजनों तथा व्रत को लोग स्वर्ग–प्राप्ति का साधन मानते थे। जातियों के विभाजन को ईश्वर द्वारा रचित माना जाता था तथा जीवन की सफलताओं और असफलताओं को लोग अपने पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम मानते थे।''[1]

आज हमारे ऐसे सभी धार्मिक विश्वासों और व्यवहारों की प्रकृति में तेजी से परिवर्तन होने लगा है। अतः अधिकांश लोग तीर्थ यात्रा को मोक्ष प्राप्ति का साधन न मानकर इसे एक मनोरंजक यात्रा या भ्रमण के रूप में देखने लगे हैं। कर्मकाण्डों तथा धार्मिक आयोजनों को लोग एक दूसरे से मिलने–जुलने अथवा सामाजिक आयोजनों का क्षेत्र बढ़ाने का साधन मानते हैं। जातियों के ऊँच–नीच को सामाजिक अन्याय की निगाह से देखा जाने लगा है तथा अपनी सफलता एवं असफलता के लिए व्यक्ति स्वयं को ही उत्तरदायी मानते हैं। धार्मिक जीवन में परम्परागत विश्वासों की जगह तार्किक अथवा बुद्धिवाद का विकास हो जाने का ही परिणाम है कि ब्राह्मणों को अब दूसरी जातियों से अधिक पवित्र माना जाता है।

''संक्षेप में, धार्मिक संस्कार भी सुविधानुसार पूरे किए जाने लगे हैं। विवाह को भी एक धार्मिक संस्कार के रूप में नहीं देखा जाता। अधिकांश लोग तीर्थ स्थानों पर बने पानी के कुण्डों अथवा तालाबों में स्नान करना अथवा उस पानी से आचमन करना पवित्रता न मानकर एक अपवित्र व्यवहार के रूप में देखने लगे हैं। पुराणों और अनेक दूसरे धर्मशास्त्रों में ब्राह्मणों की अलौकिक शक्ति पर आधारित काल्पनिक कथाओं को अधिकांश लोग अब धर्म का हिस्सा मानते। स्पष्ट है कि कथाओं को अधिकांश लोग अब धर्म का हिस्सा मानते। स्पष्ट है कि आज धार्मिक विश्वासों का स्थान सांसारिक अथवा लौकिक दृष्टिकोण ने ले लिया है। परिवर्तन की इसी प्रक्रिया का नाम लौकिकीरण है।''[2]

इस प्रकार श्रीनिवास के अनुसार लौकिकीकरण वह प्रक्रिया है जो किसी समाज की धार्मिक संरचना, धार्मिक विश्वासों, परिवत्रता और अपवित्रता संबंधी विचारों आदि को अलौकिक संदर्भ में स्पष्ट न करके तार्किक और लौकिक दृष्टिकोण को अधिक महत्व देने लगती है। इस अवधारणा का प्रयोग हावर्ड बेकर ने समाज के प्रारूपों की अपनी योजना के अन्तर्गत 'पवित्र समाज' के विषयक के रूप में किया जाता है। पवित्र समाज के विपरित धर्मनिरपेक्ष समाज में आदि दैनिक मूल्यों तथा परम्परावाद एवं रूढ़िवाद को हेय दृष्टि से देखा जाता था। इस प्रकार के समाज में धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं बरता जाता। इस विशेषता के अनुसार भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य माना राज्य माना जाता है।

''लौकिकीरण का एक लक्षण बुद्धिवाद और विवेकवाद है। रूढ़ियों और अधंविश्वासों को छोड़कर तर्कयुक्त विचार और व्यवहार रखना लौकिकीकरण की विशेषता है। लौकिकीकरण के ये दो गुण भारतीय समाज में बढ़ते ही जा रहें है। लौकिकीकरण की प्रक्रिया अपवित्रता (अशुद्धता) की व्यापकता को घटाती जा रही है उसके अनुरूप जीवन में स्वच्छंदता और शुद्धता पर ध्यान दे रही है। मंदिरों व मठों की सम्पत्ति का उपयोग जन–कल्याण के लिए किया जाने लगा है। जैसे–विधवा, अनाथालय आदि खोले जा रहे हैं। श्रीनिवास के अनुसार जिन स्तरों पर संस्कृतिकरण हो गया वे शीघ्रता से लौकिकीकरण को अपनाते जा रहे हैं। समय के साथ–साथ यह अत्यंत व्यापक और गहरी होती जा रही है।''[3]

धर्मनिरपेक्षता एवं वैचारिकी–भारतीय जीवन का धर्मनिरपेक्षता अंग्रेजी शासन से आरंभ हुआ। G.J. Holker के नेतृत्व में एक आन्दोलन के रूप में लौकिकीकरण का उद्‌भव एवं विकास उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटेन में हुआ था। उनकी यह मान्यता थी कि किसी भी देश की राजनीति को धर्म से स्वतंत्र होना आवश्यक है।

एम0एम0 श्रीनिवास ने लिखा है –''जिन स्तरों पर संस्कृतीकरण हो गया है, वे शीघ्रता से लौकिकीकरण को अपनाते जा रहे हैं।''

''लौकिकीकरण की प्रक्रिया अंग्रेजी राज्य से प्रारंभ हुई थी और समाज के साथ अधिकाधिक व्यापक और गहरी हुई है।

''आइनजस्टीड (EIsenstadt) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रोहेस्टेष्ट धर्म' के आधार पर आधुनिकीकरण (Prostesant Ethic and Modernization) में यह स्वीकार किया है हिन्दु धर्म में अपनी बदलती हुई दशाओं से अनुकूलन करने तथा अपनी धार्मिक परम्पराओं की नए सिरे से व्याख्या करने की अद्‌भूत क्षमता है। संभवतः यही कारण है कि वैदिक काल से लेकर आज तक भारत में विभिन्न विचारधाराओं पर आधारित अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पथों का विकास होता रहा है।''[4]

डेविड मार्टिन जैसे विद्वान यह मानते हैं कि धर्मनिपरेक्षीकरण शब्द इतना बोझिल है कि यह शब्द प्रयोग में नही लाया जाय।

''पीटर एल0 बर्गर (The Social Reality of Religion 1969) के अनुसार विश्व को अर्थ देने के लिए मानव प्राणी का एक 'पवित्रता की छत्र–छाया' की आवश्कता है, क्योंकि एक व्यवस्थित विश्व की हमारी जरूरत के लिए अर्थहीनता एक चुनौती है।''[5]

''मॉमसकलुकमेन (The invisiable Religion-1963) ने कहा है कि आधुनिक समाजों में एक अदृश्य धर्म होता है।''[6]

''ब्रायन विलसन (Religion in Sociological Prospective-1982) का मत है कि विभिन्नता, बहुलता और नवीन धार्मिक आंदोलनों की पृथक्कारी प्रकृति युवा संस्कृतियाँ और विपरित (प्रति) संस्कृतियाँ वास्तव में चर्च (धर्म) के सामाजिक अधिकार की कमी के साक्ष्य हैं।''[7]

धर्मनिरेपेक्ष और धर्मनिरपेक्षीकरण –

धर्मनिरपेक्षवाद एक ऐसा विश्वास है जिसके आधार पर धर्म और धर्म संबंधी विचारों को इह लोक संबंधी मामलों से जानबुझकर दूर रखा जाना चाहिए। ये तटस्थता की बात है। पीटर बर्गर के अनुसार धर्मनिरपेक्षीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज व संस्कृति के विभागों को धार्मिक एवं प्रतीकों पर प्रभाव से दूर रखा जाता है।

धर्मनिरपेक्षीकरण के कारण –

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में लौकिकीरण के कुछ उपयुक्त कारण है जैसे –

आधुनिक शिक्षा – लौकिकीकरण का सबसे बड़ा कारण आधुनिक शिक्षा है, जो अंग्रेजों के साथ भारत में आयी। अतः इस शिक्षा के साथ–साथ भारत में पाश्चात्य संस्कृति का प्रवेश हुआ। अंग्रेजी भाषा, ज्ञान–विज्ञान और पाश्चात्य संस्कृति की जानकारी बढ़ने के साथ–साथ देश में परम्परागत हिन्दु धर्म का प्रभाव कम होने लगा।

नगरीकरण – लौकिकीकरण की प्रक्रिया में नगरीकरण का अत्यधिक योगदान रहा है। गाँवों की तुलना में नगरों में लौकिकीकरण अधिक हुआ है क्योंकि नगरीय जीवन की भीड़–भाड़, मकानों की कमी, यातायात और संदेशवाहक के साधनों की अधिकता और आर्थिक समस्याओं की प्रमुखता, फैशन, शिक्षा, राजनीतिक और सामाजिक संगठन, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, विवेकवाद इत्यादि से लौकिकीकरण बढ़ता है।

यातायात और संचार के साधनों में उन्नति –लौकिकीरण में यातायात और संदेशवाहन के साधनों के विकास का महत्वपूर्ण योगदान है। रेलों, बसों, टैक्सियों आदि के व्यापक प्रचार से लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने लगे जिससे उनके नए–नए लोगों से मिलने का अवसकर मिला और उनके विचारों में उदारता आयी।

सामाजिक व धार्मिक आन्दोलन –अनेक सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों ने भी लौकिकीकरण में पर्याप्त सहयोग प्रदान किया है। अंग्रेजी शासनकाल में इन आन्दोलनों में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी तथा सर्वोत्तम आन्दोलन उल्लेखनीय हैं।

पाश्चात्य संस्कृति –भारत में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ने के साथ हिन्दु–धर्म का व्यापक प्रभाव कम होता गया। भारतीय जीवन के समस्त पहलुओं विशेषकर धर्म, कला, साहित्य, सामाजिक और पारिवारिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्त्तनों को उत्पन्न किया, अतः लौकिकीकरण बढ़ा।

वैधानिक सुधार – आधुनिक काल में हिन्दु विवाह की संख्या पर हिन्दु कोड द्वारा किए गये वैधानिक परिवर्तनों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। हिन्दु विवाहित स्त्रियों के पृथम निवास और निर्वाह व्यय अधिनियम हिन्दु विवाह अधिनियम, हिन्दु उत्तराधिकार, हिन्दु दत्तक पुत्र ग्रहण और निर्वाह व्यय अधिनियम तथा हिन्दु अल्पव्यस्कता और संरक्षता अधिनियम से हिन्दु परिवार और विवाह की संस्थाओं का लौकिकीरण हुआ है।

''ब्रिटिश सरकार ने तो लौकिकीकरण को प्रोत्साहन दिया ही था, किन्तु स्वतंत्र भारत की सरकार ने तो लौकिकीकरण को और भी प्रोत्साहन दिया है। नगरीकरण तथा औद्योगिकरण के बढ़ने के साथ–साथ तेजी बढ़ती गयी। लौकिकीकरण से होने वाले परिवर्तन तीन क्षेत्रों में दिखलाई पड़ते हैं। (1) जाति–व्यवस्था (2) परिवार की व्यवस्था (3) ग्रामीण समुदाय।

डॉ0 एम. श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक 'Social Change in Modern India' में इनकी चर्चा की है।''[8]

निष्कर्ष –

ग्रामीण समुदाय पर लौकिकीरण का प्रभाव नगरों की तरह पड़ा। ग्रामीण समुदाय में जाति – पंचायतों की शक्ति घटती जा रही है और जहाँ कहीं ये पंचायते हैं, वहाँ भी वे धार्मिक लक्ष्यों को नहीं बल्कि राजनीतिक लक्ष्यों को लेकर संगठित की गयी है। ग्रामीण समाज में सम्मान का आधार धार्मिकता अथवा जाति न रहकर धन ओर सम्पत्ति रह गए हैं। इस कारण जमींदार और साहूकार का जितना सम्मान है उतना ब्राह्मण का नहीं है। पैसे जो जाने पर निम्न जाति के लोगों को उच्च जाति के व्यक्तियों से अधिक सम्मान दिया जाता है। आज ग्रामीण समुदायों में निरंतर जाति पंचायतों की शक्ति घटती जा रही है और उनका स्थान जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों एवं संगठित पंचायतों ने ले लिया है। इस अर्थ में श्रीनिवास ने भी कहा है कि ग्रामीण समुदायों में राजनीतिकरण की प्रक्रिया चल रही है। आज गाँवों में शक्ति राजनीति में सक्रिय भाग लेने का इच्छुक है। देश–विदेश की राजनीतिक बातों का ज्ञान करने की सभी की उत्कृष्ट इच्छा रहती है। शाम को चौपाल पर अब धार्मिक या सामाजिक विषयों पर विचार करने के बजाय, राजनैतिक बातों पर बहस होती है। ग्रामीण जीवन में अब एक तंत्र के बजाय प्रजातंत्र का राज्य है, क्योंकि अब जमींदार और साहूकार को राजनैतिक अधिकार प्राप्त हो गए हैं। पहले का ग्रामवासी जितना भोला–भाल, सीधा–सरल और दब्बू होता था, आज उतना ही अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होता जा रहा है।

इतना ही नहीं ग्रामीण समुदाय के आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन में भी पर्याप्त लौकिकीकरण हो रहा है। गाँवों में आज अर्न्तजातीय विवाह देखने को मिलते हैं, उनका जीवन स्तर ऊँचा हो रहा है। (बाल–विवाह प्रथा समाप्त होते जा रही है।) विधवा विवाह से संबंधित दृष्टिकोणों में भी परिवर्तन आ रहा है। इसके अतिरिक्त जाति–प्रथा और संयुक्त परिवार का भी विघटन हो रहा है। इसी प्रकार आर्थिक जीवन में भी आज पहले जैसा कठोरता का पालन नहीं किया जाता है। विज्ञान के प्रभाव में आकर धर्म का महत्व भी ग्रामीण समुदायों में अत्यधिक कम हो गया है। अन्य धार्मिक क्रियाकलापों को ये जीवन का अभिन्न अंग नहीं मानते बल्कि उनके दृष्टिकोण में पर्याप्त संशोधन व परिवर्तन आ रहा है। अब वे अंधविश्वासी या रूढ़िवादी नहीं रहे हैं, बल्कि वैज्ञानिक विचारों से समस्या का समाधान भी कर लेते हैं।

''जैसे–जैसे वैज्ञानिक ज्ञान और प्रविधि का क्षेत्र विस्तृत होता है, धर्म का क्षेत्र संकुचित होता जाता है। इसके कुछ कार्य अन्य एजेंसियों द्वारा ले लिए जाते हैं। दुबे (1994 : 80) का मानना है कि सरल समाजों में जिन्हें व्यवहारिक व अनुभवात्मक ज्ञान कम होता है, इसके प्रभाव से क्षेत्र अधिक होता है। प्राद्यौगिकी अर्थ में कम विकसित समाज में सांसारिक उपलब्धियों के लिए अति प्राकृतिक शक्तियों को बड़े पैमाने पर प्रसन्न करने के लिए संस्कार एवं प्रतीकात्मक कार्य किए जाते हैं। आधुनिक औद्योगिक समाजों में धार्मिक विश्वासों की पकड़ ढीली पड़ जाती है, यद्यपि धर्म में रूची खर्च बनी रहती है। यह सामूहिक मामला न होकर व्यक्तिगत रहता है।''

संदर्भ

1. Benson Purnell Honely - "Religion in Contemporary Culture, Harper and Brother - New York, 1966

2. Dumlop knight Religion - Its function in Human life. He grow Hill Book company, New York - 1946
3. Fnkelstein Laws - Culture and Religion, Harper, New York - 1949
4. Elsentadt - Protestant Ethic and Modernization.
5. Beager L. Peter - The social Reality of Religion, 1969
6. Mamaslucman - The invisiable Religion 1968.
7. Willson Bryyan - Religion in Sociological Prospective 1982
8. Sriniwas. M.N. - Social Change in Modern India - Orient Logmann.

पता –

ओम साईं सदन
पासपोर्ट ऑफिस के सामने
आशियाना दीघा रोड, बेली रोड
पटना – 800014 (बिहार)